om-13 final_Page 1 and 2 07-10-2014 20:59 Page 10

समर्पण का दूसरा नाम प्रेम

-ब्र.कु.प्रभा, डिफेन्स कॉलोनी, दिल्ली।

प्रेम समर्पण है, प्रेम है पूजा। प्रेम के रंग सा न रंग कोई दूजा।।
प्रेम में जो जिए वो जीना भी तो क्या है।
प्रेम के रंग का तो अपना मज़ा है।।

एक कवि की कल्पना में यह बात सामने आई कि क्या हम प्रेम, प्यार, इश्क और मोहब्बत को एक साथ जोड़कर देख सकते हैं? वो अपने आप में ही जैसे असमंजस की स्थिति में है! सोचता है कि अगर मैं एक साथ इसको जोड़ूं तो क्या इसके सच्चे अर्थ के साथ मैं न्याय कर पाऊँगा? शायद नहीं। क्योंकि सूफी भक्ति धारा से लेकर निर्गुण भक्ति धारा तक सभी ने अपने-अपने ढंग से इसे परिभाषित किया है। सभी प्रेम को अलग दृष्टि से देखते हैं और इश्क और मोहब्बत को अलग दर्ज़े के साथ जोड़ते हैं। तो अब मैं इस कवि की कल्पना को कुछ अपने अनुभवों के आधार से तथा कुछ शास्त्रगत, काव्यगत उक्तियों के आधार से अनुभव के धरातल पर लाकर सबके समक्ष इसकी सही उपमा के साथ जोड़ना चाहूँगा।

हिंदी के एक बहुत सुंदर कवि ने कहा कि प्रेम, प्यार, इश्क और मोहब्बत अलग-अलग अर्थ रखते हैं। इसे परिभाषित करते हुए कहा कि प्रेम समर्पण का नाम है, प्रेम पूजा की तरह है जिसमें कुछ लेने की इच्छा नहीं हो, सिर्फ देने की हो उसे प्रेम का नाम दे सकते हैं। प्यार के लिए कहना था कि प्यार में एक चाहत होती है जो जिस्मानी होती है। इसीलिए आज का प्यार अल्पकालिक है क्योंकि सभी बाहरी आवरण से प्यार करते हैं। अगर ये चाहत नहीं होती तो जब कोई शरीर जीर्ण अवस्था में पहुँचता है तो लोग उसे छोड़ दूसरे पर क्यों आकर्षित हो जाते हैं? यही आकर्षण है जो चाहत को इंगित करता है। इश्क की भाषा को उन्होंने मौन कहा, ये कहते हुए कि इश्क किया जाता है बताया नहीं जाता। मोहब्बत छोटे बच्चों से की जाती है। ये तो हो गई उसकी कल्पना या फिर उसके अनुभव या फिर आत्म मंथन, कि शायद यही परिभाषा सर्वथा उचित है। लेखक भी यही कह रहा है कि कवि की कल्पना में हकीकत है। अब मैं प्रेम को आपके सामने गहराई से रखता हूँ।

प्रेम एक बहुत सुंदर अनुभूति है जो इस संसार को रहने लायक बनाती है। उदाहरण के लिए जैसे ईंट, लोहा, रेत और मार्बल को जोड़ने का काम सीमेंट करता है वैसे ही मानव को मानव से जोड़ने का काम प्रेम का है। सच्चा प्रेम नि:स्वार्थ होगा, आत्मिक होगा, देने के भाव से जुड़ेगा। कई बार लोग प्रेम को भी अलग-अलग रंग देते हैं, अलग-अलग नाम देते हैं। इसको परिभाषित अगर किया जाए तो इसके कई पहलू निकलकर सामने आएंगे। पहला, स्वयं से प्रेम, स्कूल से प्रेम, सहपाठी से प्रेम, परिवार से प्रेम, प्रकृति से प्रेम, देह से प्रेम, प्रभु से प्रेम आदि आदि।

यदि किसी से पूछा जाए कि आप स्वयं से प्रेम करते हैं तो ज़्यादातर उन्हें समझ नहीं आता कि स्वयं से प्रेम का क्या मतलब है। स्वयं से प्रेम का मतलब है अपनी विशेषताओं से प्यार करना, जैसे मैं जल्दी उठता हूँ, मैं रोज़ाना मंदिर जाता हूँ, मुझमें बहुत सारी विशेषताएँ हैं।

प्रेम एक आकर्षण की शक्ति है, यह लोगों को वो जैसे हैं वैसे ही स्वीकार करने की प्रेरणा देता है। यह सार्वभौमिक है, अर्थात् सीमाओं से परे है। अगर आप किसी से प्रेम करते हैं तो आप कह सकते हैं कि मैं वह सबकुछ चाहता हूँ जो उनके लिए अच्छा है। अगर मैं प्रेम करने वाला व्यक्ति हूँ तो मैं दूसरों से वैसे ही व्यवहार की अपेक्षा रखूँगा जैसा मैं दूसरों से करता हूँ। इसके अलावा परमात्मा की बनाई हर चीज़ से मुझे प्यार होगा।

यहाँ चार तरह के भ्रम की स्थिति बनती है कि लोगों को लगता है कि किसी इच्छा से जुड़ना किसी से या अपने बच्चे से प्यार करना या देह से प्यार करना आदि प्रेम ही है, लेकिन यह गलत है।

1. इच्छा रूप में भूल - जैसे कोई कहता है कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ तो कोई ज़रूरी नहीं है कि वाकई आपसे प्रेम करता है। इसका अर्थ है कि मैं तुम्हें चाहता हूँ, मैं तुम्हारे साथ रहना चाहता हूँ। वैसे ही दूसरा भी कहेगा कि मैं भी तुम्हें बहुत प्रेम करता हूँ, अर्थात् मैंने तुम्हें पा लिया है। परंतु सच्चा प्रेम ना ही चाहता है और ना ही प्राप्त करता है, वो तो पूर्ण है, वो सिर्फ देने की मंसा से जुड़ना चाहता है न कि प्राप्त करने की। आज यही हो रहा है, यदि यह प्रेम होता तो आज पति-पत्नी के सम्बन्धों में दूरियाँ नहीं आतीं, वे हमेशा साथ रहते और सम्मान के साथ रहते।

2. लगाव के रूप में भूल - कई बच्चे कहते हैं कि मैं अपनी माँ से बहुत प्रेम करता हूँ। अगर उससे पूछा जाए कि क्यों? तो कहेंगे कि मम्मी बहुत स्वादिष्ट खाना बनाती हैं इसलिए मैं उसे प्रेम करता हूँ। अब ये प्रेम नहीं लगाव है। यदि भोजन स्वादिष्ट नहीं है तो प्रेम नहीं है। यह किसी अन्य कारण से लगाव है जो समय प्रति समय भय पैदा करेगा कि अगर खाना ठीक नहीं बनेगा तो मन ठीक नहीं रहेगा। इसको लगाव द्वारा बिगाड़ा गया प्रेम कहते हैं।

3. निर्भरता के रूप में भूल - अगर कोई आपको हमेशा सबकुछ उपलब्ध कराता है तो आप उसके ऊपर निर्भर हो जाते हो और उसे भी प्रेम का नाम देते हो। जैसे जो लंच पैकिंग या फिर व्यवस्थित रूप से सामान आदि रखने के कारण मैं उनसे बहुत प्रेम करता हूँ। इसका अर्थ वो सामान ठीक ना रखे तो प्रेम नहीं होगा। प्रेम कभी निर्भर नहीं होता। यह निर्भरता नुकसान पैदा करता है।

4. पहचान के रूप में भूल - कोई कहता है कि मैं अपने राष्ट्र या देश से प्रेम करता हूँ, यह भी प्रेम नहीं है बल्कि यह एक पहचान है अपनी राष्ट्रीयता के साथ। मैं आपको बता दूँ कि प्रेम किसी चीज़ के साथ अपनी पहचान नहीं करता है क्योंकि स्वयं की कोई राष्ट्रीयता नहीं होती। जैसे ही हम किसी चीज़ (व्यक्ति, वस्तु अथवा नाम) जो हम नहीं हैं के साथ स्वयं को जोड़ते हैं या पहचान करते हैं तो वहीं से हमारा ईगो या अहम् जन्म लेता है। उदाहरण के लिए जैसे आप कहते हैं कि मैं एक डॉक्टर हूँ, मैं इंजीनियर हूँ, मैं समाजसेवक हूँ। अरे भाई! डॉक्टर, इंजीनियर या समाजसेवक का पद आपने एक नियमित अंतराल के बाद प्राप्त किया जो समयानुसार खत्म हो जाएगा। आप चलो चालीस साल, पचास साल डॉक्टर या इंजीनियर रहेंगे, इसके बाद तो आप एक आम नागरिक हैं। बस यही भूल आपको तकलीफ देती है और ताउम्र एक लेबल चिपका लेते हैं कि मैं रिटायर्ड डॉक्टर हूँ और उसी भूमिका में अपने आप को मानते हैं। अब जो आपको जानता है वो तो कह देगा, और डॉक्टर साहब आप ठीक हैं, आपका हालचाल पूछ लेगा और जो नहीं जानता वो तो एक आम इंसान ही मानेगा आपको। इसलिए आपको दर्द होता है कि उसने मुझे डॉक्टर, इंजीनियर नहीं बोला। आप एक सुंदर सी आत्मा हैं और आत्मा ने शरीर से ये सबकुछ एचीव किया है। इस एचीवमेंट को आप खुद की पहचान मान लेते हैं, जिससे आपको दर्द होता है।

प्रेम स्वयं को बिना शर्त देने से, नि:स्वार्थ दया के कार्यों से, बिना शर्त क्षमादान देने से या असीम कृपा से प्राप्त होता है। इरादतन 'प्रेम' प्रेम नहीं है क्योंकि प्रेम को कारण की ज़रूरत नहीं है। उपरोक्त सारी बातें जो आपको बताई गईं ये सारी ज़रूरत की संतुष्टि है। जब प्रेम पूरा होता है तो कोई ज़रूरतें नहीं होतीं। तो यह बात समझ गये होंगे आप कि आज कोई किसी से प्रेम नहीं करता, सिर्फ चाहत रखता है।

अगर मैं कहूँ कि आप स्वयं से प्रेम करते हैं? तो आप कहेंगे हाँ और आप दर्पण में दोहराते रहो कि मैं अपने आप से बहुत प्यार करता हूँ तो कभी परिवर्तन नहीं होगा क्योंकि जो चेहरा आप दर्पण में देख रहे हैं वो एक नकाब है और वो प्यार शरीर से हो जाएगा। बाद में वो लगाव में बदल जाएगा। स्वयं से प्रेम का मतलब है कि मैं आत्मा जन्मजात प्रेम स्वरूप हूँ, मुझे किसी से भी प्रेम मांगने की ज़रूरत नहीं है, मैं मूल रूप से प्रेम के रंग में रंगी हुई आत्मा ही तो हूँ। ये सच्चा प्रेम है।

शिमला-हि.प्र.। मुख्यमंत्री माननीय वीरभद्र सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता।

जबलपुर-म.प्र.। एस.एस. तोमर,वाइस चांसलर,जवाहर लाल नेहरु कृषि विश्व विद्यालय को राखी बांधने के पश्चात् आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. गीता।

नरसिंगपुर-म.प्र.। सी.ई.ओ. कौशलेन्द्र विक्रम सिंह को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कुसुम।

अमरावती-महा.। महा नगरपालिका आयुक्त डोंगरे साहब को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सीता,क्षेत्रीय संचालिका। साथ हैं ब्र.कु. भारती व ब्र.कु. शिरभाते।

आजमगढ़। एस.एस.पी. दिनेशचन्द्र दूबे को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रंजना।

गोला गोकर्ण नाथ। विधायक विनय तिवारी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता।